

भक्ष्याभक्ष्य-विवेक

-प्रो. वीरसागर जैन

हम लोगों को जीवन-यापन के लिए कुछ खाना तो अनिवार्य है, परन्तु जैन आचार्यों ने कहा कि इसमें हमें थोड़ा विवेक रखना चाहिए कि क्या खाने योग्य है और क्या खाने योग्य नहीं है, अन्यथा हमें अनेक प्रकार की हानि होगी | बस, इसी का नाम भक्ष्याभक्ष्य-विवेक है |

कुछ लोग कहते हैं कि इस दुनिया में जो कुछ भी है, सब खाने के लिए ही है, इसलिए ऐसा सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है, जब जो मिले खा लेना चाहिए |

परन्तु सावधानी से विचार करो तो यह सब बात अच्छी तरह समझ में आ जाती है | जरा सोचिए, क्या आप पत्थर, मिट्टी, लोहा, कांच आदि कुछ भी खा लेते हैं ? नहीं न ? बस इसीलिए भक्ष्याभक्ष्य-विवेक की आवश्यकता है |

आप कह सकते हैं कि पत्थर, मिट्टी, लोहा, कांच आदि तो खाने की वस्तुएँ ही नहीं हैं, अतः उनकी बात अलग है, पर इस दुनिया में जो भी खाने की वस्तुएँ हैं वे तो सभी हमें खा लेनी चाहिए, उनमें कुछ भी भेद करने की कोई आवश्यकता नहीं है |

परन्तु भाई, इन वस्तुओं को भी कोई-न-कोई तो खाता ही है, फिर हम क्यों नहीं खा सकते ? तथा इससे भी यह तो सिद्ध हो ही गया कि कुछ वस्तुएँ इस दुनिया में नहीं खाने योग्य भी हैं और इसीलिए भक्ष्याभक्ष्य-विवेक की आवश्यकता है |

खाने की वस्तुओं में भी जरा विचार कीजिए क्या आप एक्सपायर्ड दवाई खा लेंगे ? अथवा कोई आपको बासा या सड़ा-गला भोजन दे तो उसे कर लेंगे ? नहीं न ? बस इसी से सिद्ध होता है कि जीवन में भक्ष्याभक्ष्य-विवेक की बड़ी आवश्यकता है, अन्यथा हमें अनेक प्रकार की हानियाँ होंगी |

‘भक्ष्य’ का अर्थ है- भक्षण करने योग्य और ‘अभक्ष्य’ का अर्थ है- भक्षण नहीं करने योग्य | ‘विवेक’ का अर्थ होता है- अंतर जानना | भक्ष्य और अभक्ष्य में अंतर जानना ही भक्ष्याभक्ष्य-विवेक है |

वास्तव में देखा जाए तो यह भक्ष्याभक्ष्य-विवेक पशु-पक्षियों में भी होता है, फिर हम तो मनुष्य हैं, हम में तो अवश्य ही कुछ विशेष भक्ष्याभक्ष्य-विवेक होना चाहिए | गाय के आगे यदि पानी और शराब दोनों की बाल्टी रखी जाएँ तो गाय पानी पी लेगी, पर शराब नहीं पीएगी, इससे सिद्ध होता है कि गाय में भी भक्ष्याभक्ष्य-विवेक है | इसी प्रकार यदि आप गधे के आगे घास और तम्बाकू दोनों रखेंगे तो गधा घास खा लेगा, पर तम्बाकू छोड़ देगा | इससे सिद्ध होता है कि गधे में भी भक्ष्याभक्ष्य-विवेक है |

इसप्रकार जब पशु-पक्षियों में भी भक्ष्याभक्ष्य-विवेक होता है तो हम मनुष्यों में तो अवश्य ही भक्ष्याभक्ष्य-विवेक होना चाहिए |

जैन आचार्यों के अनुसार अभक्ष्य वस्तुएँ 5 प्रकार की होती हैं- त्रसघात, बहुघात, नशाकारक, अनिष्ट और अनुपसेव्य | इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

- 1. त्रसघात-** जिन वस्तुओं को खाने से त्रस जीवों की हिंसा होती है, उन्हें त्रसघात अभक्ष्य कहते हैं | जैसे- मांस, मछली आदि त्रसघात अभक्ष्य हैं, क्योंकि इनके खाने से त्रस जीवों की हिंसा होती है | तथा बड़, पीपल, उमर, पाकर और कठूमर -ये पंच उदुम्बर फल भी त्रसघात अभक्ष्य हैं, क्योंकि इनके अन्दर सूक्ष्म त्रस जीव भरे होते हैं, उनकी हिंसा होती है। दो-इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के सभी जीवों को त्रस कहते हैं |
- 2. बहुघात-** जिन वस्तुओं को खाने से बहुत अर्थात् अनन्त जीवों की हिंसा होती है, उन्हें बहुघात अभक्ष्य कहते हैं | जैसे- आलू, गाजर, मूली इत्यादि वस्तुएँ बहुघात अभक्ष्य हैं, क्योंकि इनके खाने से अनन्त जीवों की हिंसा होती है | इनमें अनन्त निगोदिया जीव रहते हैं |
- 3. नशाकारक-** जिन वस्तुओं को खाने से नशा उत्पन्न होता है, उन्हें नशाकारक अभक्ष्य कहते हैं | जैसे- शराब, तम्बाकू, भाँग, चरस, अफीम इत्यादि सभी वस्तुएँ नशाकारक अभक्ष्य हैं, क्योंकि इनके सेवन से नशा उत्पन्न होता है | इनसे हिंसा भी होती है, प्रमाद भी उत्पन्न होता है, स्वास्थ्य भी खराब होता है, तथा अन्य भी अनेक हानियाँ होती हैं, अतः हमें नशाकारक अभक्ष्य वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए |
- 4. अनिष्ट-** जो वस्तुएँ व्यक्तिगत रूप से हमें हानिकारक होती हैं, उन्हें अनिष्ट अभक्ष्य कहते हैं | जैसे कि उच्च रक्तचाप वाले व्यक्ति को नमक और हृदयाघात वाले व्यक्ति को घी अनिष्ट अभक्ष्य हैं, क्योंकि उनका सेवन तीव्र राग के बिना नहीं हो सकता | जैन धर्म में तीव्र राग को भी अत्यन्त हेय कहा है | देखा जाता है कि पशु-पक्षी भी ऐसी वस्तुएँ नहीं खाते, जो उन्हें अनिष्ट होती हैं |
- 5. अनुपसेव्य-** जिनका सेवन उत्तम पुरुष बुरा मानते हैं अथवा जिन वस्तुओं के सेवन से लोक में निन्दा होती है, उन्हें अनुपसेव्य अभक्ष्य कहते हैं | जैसे- मल, मूत्र, लार आदि अनुपसेव्य अभक्ष्य हैं, क्योंकि इनका सेवन अच्छा नहीं समझा जाता, उससे लोक में निन्दा होती है |

ज्ञातव्य है कि कुछ वस्तुएँ एकाधिक कोटि में भी गिनी जा सकती हैं | जैसे कि शराब नशाकारक अभक्ष्य तो है ही, त्रसघात अभक्ष्य भी है, क्योंकि उसमें त्रस जीवों की भी हिंसा होती है |

इस प्रकार उक्त 5 प्रकार के अभक्ष्य पदार्थों का वर्णन करके जैन ग्रन्थों में भक्ष्याभक्ष्य-विवेक कराया गया है | इसके अतिरिक्त जैन ग्रन्थों में निम्नलिखित 22 अभक्ष्य भी गिनाये गये हैं, जिनके नाम इस प्रकार ज्ञातव्य हैं-

1. ओला-
2. दही बड़ा,
3. रात्रिभोजन,
4. बहुबीजा,
5. बैंगन,
6. अचार (चौबीस घण्टे बाद का)
7. बड़,
8. पीपल,
9. ऊमर,
10. कठूमर,
11. पाकर,
12. अनजानफल,
13. कंदमूल (मूली, गाजर, आदि),
14. मिट्टी,

15. विष (शंखिया, धतूरा आदि),
16. आमिष - मांस,
17. शहद,
18. मक्खन,
19. मदिरा,

20. अतितुच्छ फल (बिल्कुल कच्चे छोटे-छोटे फल)
21. तुषार - बर्फ
22. चलित रस (जिनका स्वाद बिगड़ जाये)

इन सबको सरलतापूर्वक याद करने के लिए एक छन्द भी बहुत प्रसिद्ध है, जो बहुत-से जैन साधकों को कंठस्थ भी पाया जाता है, हमें भी कर लेना चाहिए | यथा-

**ओला घोरबड़ा निशिभोजन, बहुबीजा बैंगन संधान ।
बड़ पीपर ऊमर कठऊमर, पाकर फल जो होय अजान ॥
कंदमूल माटी विष आमिष, मधु माखन अरु मदिरापान ।
फल अतितुच्छ तुषार चलित रस, ये बाईस अभक्ष्य बखान ॥**

इनके अतिरिक्त काल की मर्यादा के आधार पर भी अभक्ष्य पदार्थों का निरूपण किया गया है | जैसे कि आटा सर्दी में सात दिन, गर्मी में पाँच दिन और वर्षा में तीन दिन तक ही भक्ष्य है | उसके बाद अभक्ष्य हो जाता है, क्योंकि उसमें सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है | इसी प्रकार बूरा सर्दी में तीस दिन, गर्मी में पन्द्रह दिन और वर्षा में सात दिन तक ही भक्ष्य है | उसके बाद अभक्ष्य हो जाता है, क्योंकि उसमें सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है |

इसी प्रकार अन्य भी बहुत वस्तुओं के विषय में बताया गया है, जिसका पूरा विवरण जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, क्रियाकोश आदि अनेक ग्रन्थों में आसानी से देखा जा सकता है | पूजन-पाठ की पुस्तकों में भी उसकी सारिणी बनी हुई मिलती है |

जैन परम्परा में शुद्ध भोजन को 'चौका' कहा जाता है | चौका का अर्थ है- जिसमें द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव -इन चारों की शुद्धि हो वही शुद्ध भोजन है, अन्यथा अभक्ष्य है | यह बहुत महत्वपूर्ण बात है, इसे सावधानी से समझना चाहिए | इसके अनुसार यदि शुद्ध द्रव्य भी अनुचित क्षेत्र या काल या भाव में ग्रहण किया जाए तो वह अभक्ष्य है | जैसे कि शुद्ध भोजन में रात्रि में ग्रहण किया जाए तो अभक्ष्य है |

इस प्रकार भक्ष्याभक्ष्य-विवेक के लिए चतुर्विध शुद्धि अर्थात् चौका का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है, मात्र द्रव्यशुद्धि पर्याप्त नहीं है | प्रायः लोग इसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं | 'चौका' के सम्बन्ध में मुझे ब्र. पं. रवीन्द्रजी का निम्नलिखित कथन बहुत सारगर्भित लगता है कि- जो न्यायपूर्वक कमाया गया हो, यत्नाचारपूर्वक बनाया गया हो, वात्सल्यपूर्वक खिलाया गया हो और अनासक्तिपूर्वक खाया गया हो, उसे 'चौका' या शुद्ध भोजन कहते हैं | यही है शुद्ध भोजन की पूर्ण परिभाषा, यही है सम्पूर्ण भक्ष्याभक्ष्य-विवेक |

दरअसल, भक्ष्याभक्ष्य-विवेक को समझने और पालने के लिए अनासक्ति के विषय को समझना अनिवार्य है, क्योंकि भोजन के प्रति आसक्ति को तोड़ना भक्ष्याभक्ष्य-विवेक का प्रमुख उद्देश्य है | जो व्यक्ति यह जानता है कि

मैं तो स्वभाव से अनहारी हूँ अथवा ज्ञानामृतभोजी हूँ, भक्ष्याभक्ष्य-विवेक के विषय को भलीभांति समझ और पाल सकता हूँ ।